BREAKING NEWS

CURRENT AFFAIRS

UPSC-CSE

07 NOVEMBER 2024

Abhay Sir

Result Mitra New Initiative

साथियों भारत माता का ऋण तो हम जीवन में कभी नहीं उतार सकते लेकिन अपने देशवासियों को शिक्षित कर, उन तक सही ज्ञान पहुँचाकर देश सेवा जरूर कर सकते हैं.

इसी मुहीम में हम एक बहुत बड़ा कदम गुरुवार शाम 6 बजे उठाने जा रहे हैं. हम चाहते हैं की इस सफर में हमें आपका साथ मिले इसीलिए हम गुरुवार शाम 6 बजे आपका इंतजार करेंगे अपने Result Mitra यूट्यूब चैनल पर. आपने अभी तक हमारा धमाका देखा है अब आप Big Bang देखेंगे.

यह INITIATIVE आपके UPSC और State PCS की राह को बहुत ही आसान और इंट्रेस्टिंग बनायेगा.मिलते हैं गुरुवार शाम 6 बजे अपने Result Mitra यूट्यूब चैनल पर।

आप इस नये सफर में पीछे न रह जायें इसके लिए आप हमारे WhatsApp चैनल और Telegram चैनल से जुड़ सकते हैं. इनका लिंक हमारे सभी वीडियो के डिस्क्रिप्शन में है.

ग्लोबल हेल्थ इमरजेंसी कॉर्प्स (जीएचईसी)

स्वास्थ्य

डब्ल्यूएचओ ने एमपॉक्स के प्रकोप से निपटने के लिए पहली बार 'ग्लोबल हेल्थ इमरजेंसी कॉर्प्स' किया सक्रिय

इस साल 18 अफ्रीकी देशों ने एमपॉक्स के मामलों की जानकारी दी है और कम से कम दो अन्य क्षेत्रों में क्लेड 1 बी एमपॉक्स के तेजी से फैलने से इसके आगे प्रसार के बारे में चिंताएं बढ़ गई हैं।

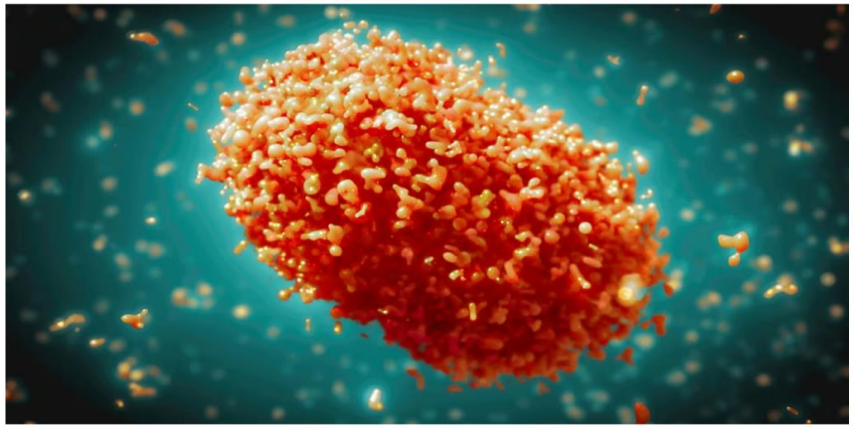

Source :– Down to earth

- एमपॉक्स के प्रकोप का सामना कर रहे देशों को मदद करने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने सदस्य देशों के साथ मिलकर पहली बार ग्लोबल हेल्थ इमरजेंसी कॉर्प्स (जीएचईसी) को सक्रिय किया।

- **ग्लोबल हेल्थ इमरजेंसी कॉर्प्स (जीएचईसी) :–** यह पेशेवरों का एक समूह है

- **ग्लोबल हेल्थ इमरजेंसी कॉर्प्स का उद्देश्य :–** 1. स्वास्थ्य आपात स्थितियों से निपटने में मदद करना।

- 2. यह देशों और स्वास्थ्य आपातकालीन नेटवर्क के लिए एक सहयोग मंच के रूप में काम करता है।

- 3.यह देशों को उनके स्वास्थ्य आपातकाल में काम करने वाले लोगों, विशेषज्ञों और तकनीकी लोगों के नेटवर्किंग में सहायता करता है।

- डब्ल्यूएचओ के द्वारा साल 2023 में जीएचईसी की स्थापना की गई।

- **स्थापना का उद्देश्य :–** कोविड-19 महामारी के दौरान देशों को बेहतर तरीके से सहायता सुनिश्चित करने के लिए ।

- **एमपॉक्स :–** इस वर्ष अफ्रीका के 18 देशों ने एमपॉक्स के मामलों की गंभीरता देखी गई और इसके आगे प्रसार के बारे में चिंताएं बढ़ गई हैं।

Mpox

- मूल नाम :– मंकीपॉक्स।
- कैसी बीमारी :– जूनोटिक द्वारा।
- विशेषता :– 1. एम पॉक्स वायरस (MPXV) ऑर्थोपॉक्सवायरस जीनस का वायरस है।
- यह बाह्य आवरण से युक्त डबल-स्ट्रेंडेड DNA वायरस है।
- Mpox पहली बार 1958 में डेनमार्क में शोध के लिए रखे गए बंदरों में पाया गया।
- Mpox के मानव में संक्रमण का पहला मामला 1970 में DRC कांगो में नौ माह के बालक में।

संचरण:

- 1.संक्रमित व्यक्ति के संपर्क से
- 2. जानवर के निकट संपर्क से
- 3.गर्भावस्था के दौरान माता से भ्रूण में।
- WHO Mpox को दो बार 2022 और 2024 में "अंतर्राष्ट्रीय चिंता का लोक स्वास्थ्य आपातकाल" घोषित कर चुका है।

पर्यावरण

सार्वभौमिक नहीं हो सकते सामुदायिक और संरक्षण रिजर्वों पर लगाए जाने वाले प्रतिबंध: सुप्रीम कोर्ट

सुप्रीम कोर्ट का कहना है कि, "जहां तक संरक्षण और सामुदायिक रिजर्व का सवाल है, इसमें स्थानीय समुदायों की भागीदारी बेहद मायने रखती है"

Source :- DOWN TO EARTH

- सुप्रीम कोर्ट (एससी) ने अपने एक निर्णय में कहा है कि संरक्षण और सामुदायिक रिजर्वों में लगाए जाने वाले प्रतिबंधों के लिए सार्वभौमिक दिशा-निर्देश निर्धारित करना उचित नहीं।

- सर्वोच्च न्यायालय ने आगे कहा , "भारत सरकार ने पहले ही दिशानिर्देश तैयार कर लिए हैं, ऐसे में राज्य सरकारें मामले को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय ले सकती हैं कि किसी विशेष संरक्षण या सामुदायिक रिजर्व में क्या प्रतिबंध लागू किए जाएं।"

- सर्वोच्च न्यायालय ने 14 फरवरी, 2024 को एक आदेश दिया जिसमे केंद्र को निर्देश दिया गया की राज्य सरकारों के साथ विचार-विमर्श करे कि क्या संरक्षण और सामुदायिक रिजर्वों के दस किलोमीटर के दायरे में खनन गतिविधियों पर कोई प्रतिबंध लगाया जा सकता है या नहीं।

- केंद्र सरकार की ओर से एक हलफनामा प्रस्तुत किया गया जिसे अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ऐश्वर्या भाटी प्रतस्तु हुए ।

- हलफनामे से पता चला की इसमें शामिल प्रतिभागियों ने संरक्षण और सामुदायिक रिजर्वों के भीतर सख्त नियमों को लागू करने को लेकर अपनी चिंताएं व्यक्त की हैं।

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि, “जहां तक संरक्षण और सामुदायिक रिजर्व का सवाल है, इसमें स्थानीय समुदायों की भागीदारी बेहद मायने रखती है।
- ऐसे में अगर स्थानीय आबादी इन क्षेत्रों का समर्थन करने के लिए प्रेरित नहीं होती, तब तक ऐसे क्षेत्रों को संरक्षण या सामुदायिक रिजर्व घोषित करना संभव नहीं हो सकता।“
- सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि हलफनामे से यह स्पष्ट हो जाता है कि कई राज्य सरकारों ने किसी भी संरक्षण या सामुदायिक रिजर्व को अधिसूचित नहीं किया है।
- सुप्रीम कोर्ट ने एक और निर्देश में कहा कि राज्य सरकार को कार्डाममम हिल्स रिजर्व (सीएचआर) में और अधिक भूमि को व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए उपयोग करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए।

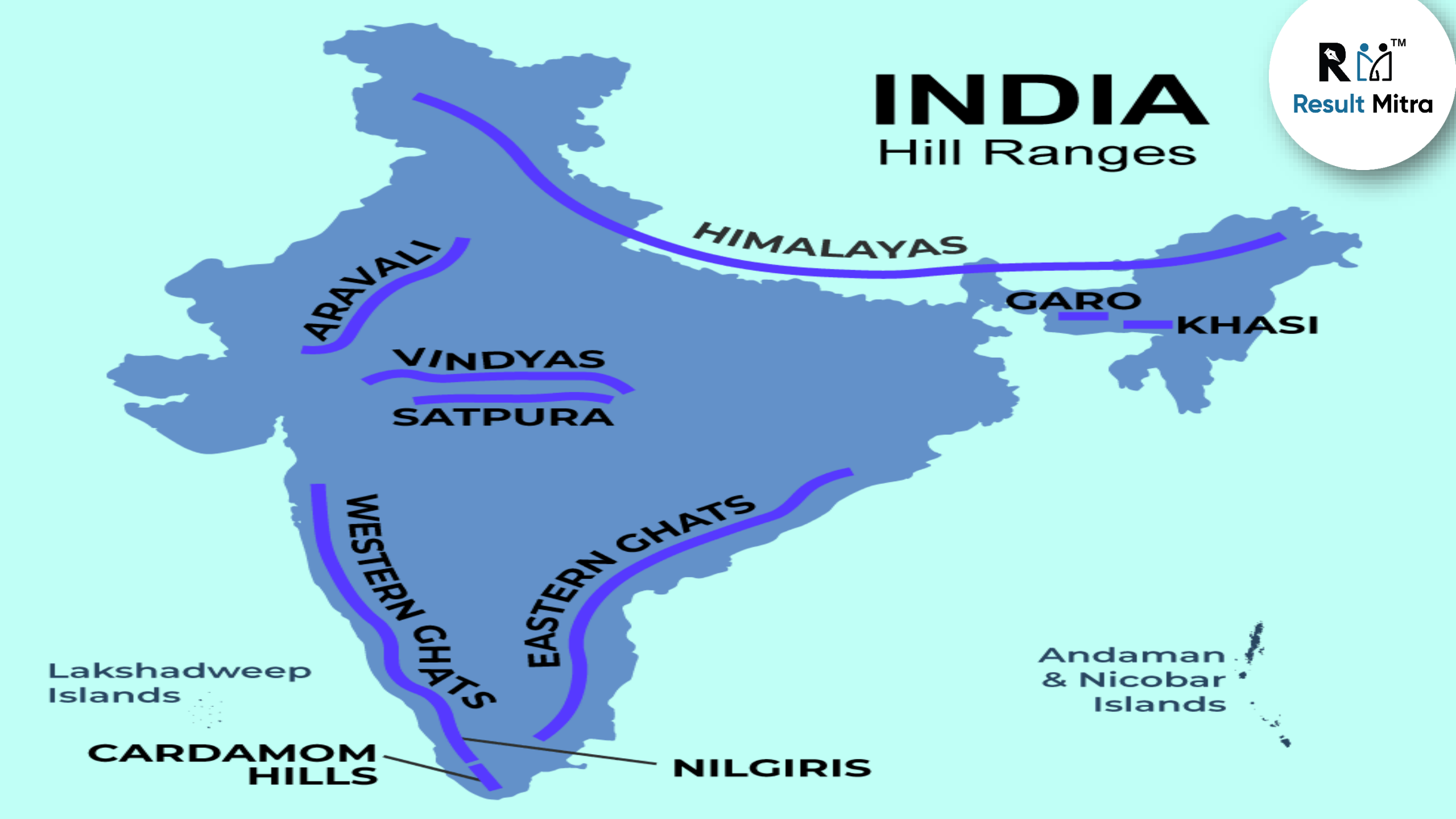
INDIA
Hill Ranges
Result Mitra
HIMALAYAS
ARAVALI
VINDYAS
SATPURA
GARO
KHASI
WESTERN GHATS
EASTERN GHATS
Lakshadweep
Islands
Andaman
& Nicobar
Islands
CARDAMOM
HILLS
NILGIRIS

पर्यावरण

युद्ध और सशस्त्र संघर्ष में पर्यावरण के शोषण को रोकने के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस, जानें– क्यों अहम है यह दिन?

युद्ध की भयावहता की गणना करते समय कोई नहीं जानता कि कितने पेड़ नष्ट हो गए हैं, कितनी जमीन बर्बाद हो गई है और कितने जानवर मारे गए हैं, कितने पानी के कुएं प्रदूषित हुए हैं।

Source:– DOWN TO EARTH

GREENLAND (DENMARK)
ALASKA (USA)
CANADA
UNITED STATES OF AMERICA
MEXICO
VENEZUELA
COLOMBIA
PERU
BRAZIL
BOLIVIA
ARGENTINA
ICELAND
NORWAY
SWEDEN
FINLAND
UNITED KINGDOM
GERMANY
POLAND
BELARUS
UKRAINE
FRANCE
ROMANIA
SPAIN
ITALY
GREECE
TURKEY
SYRIA
IRAQ
IRAN
RUSSIA
KAZAKHSTAN
MONGOLIA
CHINA
JAPAN
AFGHANISTAN
PAKISTAN
INDIA
THAILAND
MOROCCO
ALGERIA
LIBYA
EGYPT
SAUDI ARABIA
OMAN
YEMEN
MALI
NIGER
CHAD
SUDAN
ERITREA
ETHIOPIA
SOMALIA
GUINEA
NIGERIA
CENTRAL AFRICAN REPUBLIC
CAMEROON
UGANDA
KENYA
DEMOCRATIC REPUBLIC OF THE CONGO
TANZANIA
ANGOLA
ZAMBIA
NAMIBIA
BOTSWANA
SOUTH AFRICA
INDONESIA
AUSTRALIA
NEW ZEALAND

- युद्ध और सशस्त्र संघर्ष से पर्यावरण को काफी हानि हो रही है।

- पर्यावरण के शोषण को रोकने के लिए हर साल छह नवंबर को दुनिया भर में अंतर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में मनाया जाता है।

- इस दिवस का उद्देश्य:– यह दिवस युद्ध और सशस्त्र संघर्ष में हमारे पर्यावरण पर पड़ने वाले विनाशकारी प्रभाव की याद दिलाता है।

- अभी तक मानव युद्ध का अर्थ हताहतों की गिनती मृत और घायल सैनिकों और नागरिकों, नष्ट हुए शहरों और आजीविकाओं को लेकर की है किया करता था।

- युद्ध के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव पर कभी भी चर्चा नहीं की गई।
- लेकिन पर्यावरण अक्सर युद्ध का अनदेखा शिकार बना हुआ है।

वन्य जीव एवं जैव विविधता

महाराष्ट्र के पश्चिमी घाट क्षेत्र में खोजी गई स्थलीय जलपिस्सू की नई प्रजाति

जलपिस्सू की यह प्रजाति तैर नहीं सकती, इसलिए काई भरे पानी में रेंगने के लिए अपने एंटीना का उपयोग करती है

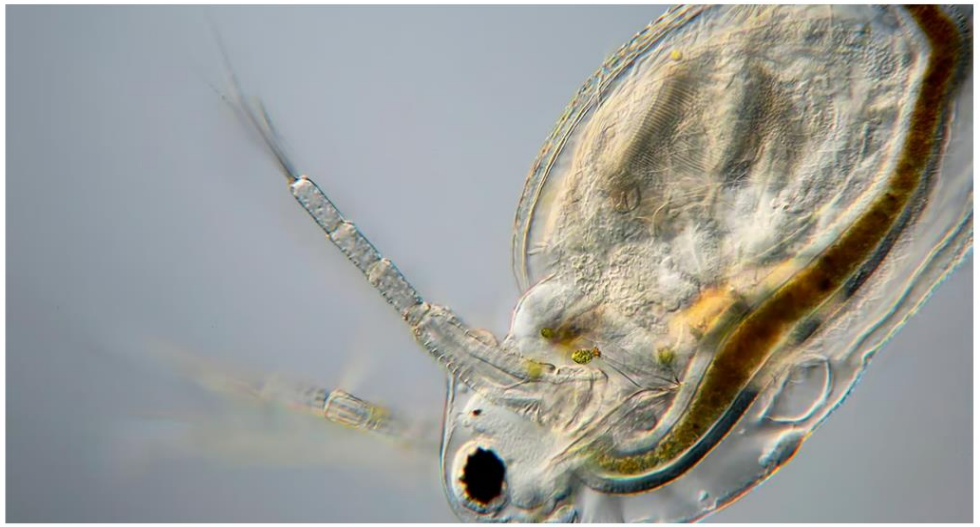

Spruce :– DOWN TO EARTH

- जीव वैज्ञानिकों के द्वारा जल पिस्सू की एक नई प्रजाति की खोज की गई।
- यह खोज महाराष्ट्र के पश्चिमी घाट क्षेत्र में की गई।
- इस पिस्सू की विशेषता :– अन्य जल पिस्सूओं के विपरीत इस प्रजाति ने अपने तैरने की क्षमता खो दी है।
- अब यह प्रजाति की पिस्सू काई जमा पानी की पतली परतों के माध्यम से रेंगती है।
- कहा मिली यह प्रजाति :– पश्चिमी घाट में पुराने किलों की दीवारों और सीढ़ियों पर काई लगे गीले स्थानों पर ।

जल पिस्सू :–

- ये छोटे क्रस्टेशियन जीव होते हैं
- ये जीव पानी में मौजूद शैवाल को छानकर खाते हैं।
- यह जीव आम तौर पर झीलों, नदियों और तालाबों में रहते हैं।
- किंतु कुछ प्रजातियां जमीन पर पानी की पतली परतों में पनपने और विकसित करने के लिए अनुकूलित है।

- यह हड्डी रहित जीव होता है जो अपने पर्यावरण में होने वाले बड़े बदलावों के प्रति बेहद संवेदनशील हैं।

प्रजाति से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी:–

- इस प्रजाति का नाम भारत के नाम पर ब्रायोस्पिलस (इंडोब्रियोस्पिलस) भरतिकस रखा गया है।

- खासियत:– यह तैरने की बजाय मानसून के दौरान काई से ढकी चट्टानों पर पानी की पतली परतों के माध्यम से रेंगती है।

- ब्रायोस्पिलस प्रजातियां जिस क्षेत्र में पाई जाती हैं, वो भी उन्हें खास बनाता है।

- वैज्ञानिकों के अनुसार संभवत: गोंडवाना से जुड़ा एक पुरातन जीव है, जिसके करीबी रिश्तेदार अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका, न्यूजीलैंड और अब भारत जैसे स्थानों में मौजूद हैं।

- भारत में अब तक खोजे गए सबसे छोटे जीवों में से एक है।

- यह उत्तरी पश्चिमी घाट में केवल दो स्थानों पर खोजा गया है।

- यह जीव बेहद कम रोशनी में रहते हैं, इसलिए इनके पास आंखें नहीं होती है।
- यह काई पर मोटे, मलबे भरे पानी में रेंगने के लिए अपने एंटीना का सहारा लेती है।
- इन एंटीना में बड़े-बड़े कांटें होते हैं, जो इसे आगे और बगल में बढ़ने में मदद करती हैं।
- इन्हें अपना भोजन खोजने के लिए रंगों को देखने की आवश्यकता नहीं होती।
- शोधकर्ताओं के मुताबिक, मानसून के मौसमों के बीच इनके काई के घर सूख जाते हैं। इसकी वजह से यह जलपिस्सू, आराम से अपने अंडे देते हैं, जो बारिश के लौटने पर फूटते हैं।

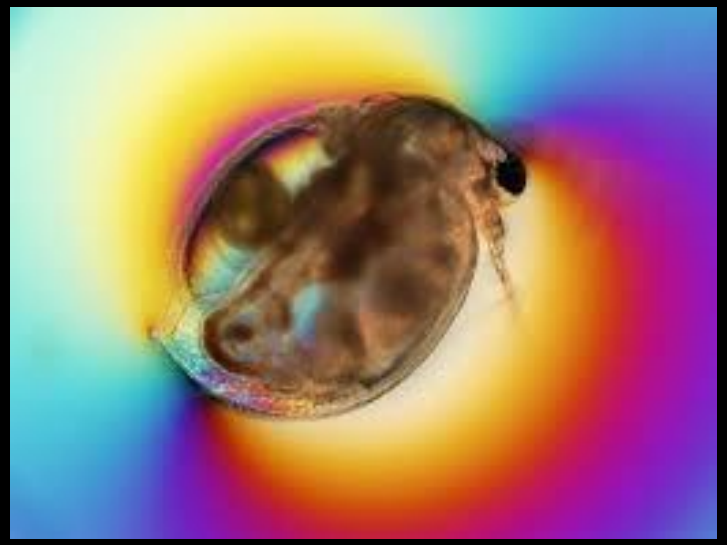

वन्य जीव एवं जैव विविधता

कैसे बचेगी जैवविविधता, जब भारत का महज 6 फीसदी से भी कम हिस्सा है संरक्षित

यदि पिछले 10 वर्षों के रुझानों को देखें तो भारत के संरक्षित क्षेत्रों में केवल 0.1 फीसदी की वृद्धि हुई है। इस रफ्तार से देखा जाए तो 2030 के लक्ष्यों को हासिल करना दूर की कौड़ी नजर आता है

Spruces :– DOWN TO EARTH

Result Mitra

- जैव विविधता की सुरक्षा के लिए सबसे प्रभावी उपकरणों में से संरक्षित क्षेत्र को माना जाता हैं

- संरक्षित क्षेत्र इतने महत्वपूर्ण होने के बाद भी भारत के कुल क्षेत्रफल का 6 फीसदी से भी कम हिस्सा है।

- यह बात एक अध्ययन से पता चली है जिसे यूनिवर्सिटी ऑफ ऑक्सफोर्ड द्वारा किया गया था

- अध्ययन में कहा गया कि 2020 में देश का केवल 6 फीसदी हिस्सा संरक्षित क्षेत्र के रूप में घोषित था।

- वहीं 2010 में यह क्षेत्र देश के केवल 5.9 फीसदी हिस्से में फैला था।

- 10 वर्षों में संरक्षित क्षेत्रों में केवल 0.1 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है।

- सरकारी आंकड़ों के अनुसार देश में संरक्षित क्षेत्र 1,73,306.83 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले हैं, जोकि देश के कुल भूभाग का महज 5.27 फीसदी हिस्सा है।

Result Mitra New Initiative

साथियों भारत माता का ऋण तो हम जीवन में कभी नहीं उतार सकते लेकिन अपने देशवासियों को शिक्षित कर, उन तक सही ज्ञान पहुँचाकर देश सेवा जरूर कर सकते हैं.

इसी मुहीम में हम एक बहुत बड़ा कदम गुरुवार शाम 6 बजे उठाने जा रहे हैं. हम चाहते हैं की इस सफर में हमें आपका साथ मिले इसीलिए हम गुरुवार शाम 6 बजे आपका इंतजार करेंगे अपने Result Mitra यूट्यूब चैनल पर. आपने अभी तक हमारा धमाका देखा है अब आप Big Bang देखेंगे.

यह INITIATIVE आपके UPSC और State PCS की राह को बहुत ही आसान और इंट्रेस्टिंग बनायेगा.मिलते हैं गुरुवार शाम 6 बजे अपने Result Mitra यूट्यूब चैनल पर।

आप इस नये सफर में पीछे न रह जायें इसके लिए आप हमारे WhatsApp चैनल और Telegram चैनल से जुड़ सकते हैं. इनका लिंक हमारे सभी वीडियो के डिस्क्रिप्शन में है.

THANK YOU

Result Mitra

@resultmitra / 8650457000

@resultmitra

@resultmitra

Result

+ SUBSCRIBE

LIKE & SHARE

PDF